शोध सारांश

‘कब तक पुकारूँ’ और ‘फकिरा’ में वर्ग संघर्ष

प्रस्तुत शोध प्रबंध का विषय ‘कब तक पुकारूँ‘ और ‘फकिरा’ में वर्ग संघर्ष है। इस शोध प्रबंध को तीन अध्यायों में बांटा गया है। प्रथम अध्याय में भारत में वर्ग संघर्ष और जाति संघर्ष की पृष्ठभूमि को पूर्ण रूप से देखने का प्रयास किया गया है तथा सामाजिक आंदोलनों के प्रभाव को भी उजागर किया गया है।

दूसरा अध्याय वर्ग और जाति का स्वरूप पर आधारित है। इसमें वर्ग का स्वरूप, प्रकार, वर्ग संघर्ष एवं जातिय संघर्ष को व्याख्यायित करते हुये इसके मूल तत्व को खोजने का प्रयास किया गया है।

तीसरा और अंतिम अध्याय ‘कब तक पुकारूँ’ और ‘फकिरा’ में वर्ग संघर्ष पर आधारित है। इसके अंतर्गत दोनों उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन एवं नटों, दलित, मांग-महार, जाति के वर्ग संघर्ष को दिखाने का प्रयास किया गया है।

‘कब तक पुकारूँ’ हिंदी का महत्वपूर्ण उपन्यास है जिसमे ‘नट’ जाति की गरीबी, शोषण तथा स्थितियों का चित्रण है। इस उपन्यास में प्रत्यक्षतः कोई वर्ग संघर्ष देखने को नहीं मिलता लेकिन वर्गीय आधार पर बटे हुये समाज के प्रति नटों में आक्रोश भरपूर मात्रा में है। यह आक्रोश सुखराम के माध्यम से विशेष रूप से व्यक्त हुआ है। जो अपनी जाति और उसके वैभव के अतीत को देखकर दुःखी होता रहता है। सुखाराम घुमंतू जाति में अवस्थित है, लेकिन वह इसे स्वीकार नहीं करता सम्पूर्ण अभावों के बावजूद उसके मन में अतीत का वैभव है इसी लिए उसे खंडहर अधूरा किला अपना दिखाई देता है। वह वर्गीय दृष्टि के आधार पर उन लोगो से नफरत करता है जिन्होंने उसके अधिकार छिन लिए हैं।

बृहदाकार यह उपन्यास नटों की पारिवारिक स्थिति स्त्रियॉं के शोषण आभाव तथा पीड़ा के दस्तावेज़ है । जिसको वर्गीय आधार पर ही देखा समझा जा सकता है ।

अपने शोध से संबंधीत उपन्यास फकिरा में अण्णा भाऊ साठे ने माँग महार जाति की इसी त्रासदी को अभिव्यक्त किया है । शोध के दौरान हमने पाया कि बहादुर और ईमानदार माने जाने वाली इस जाति के साथ सवर्ण समाजों ने बहिस्कृतों जैसा व्यवहार किया है । गाँव की मुख्य धारा से काट कर नागफनियों से घिरे मंगवाड़ें में अभाव और भूख से पीड़ित यह समुदाय न जाने कितनी पीढ़ियों से गाँव की सुरक्षा और इज्जत बढ़ाने के काम में खटता चला आ रहा है । वाटेगाँव का रणोंजी माँग फकिरा का पिता गाँव की इज्जत बढ़ाने की उद्देश से कट मरता था । इस बलिदान के लिए गाँव ने उसे गौरवानवित तो किया था, लेकिन केवल उसके शहीद होने पर यह सम्मान उसे कीला था यदि एक जीते जागते इंसान को उसके जीवन काल में मान सम्मान और अधिकारों से वंचित कर के अलग-थलग रहने के लिए मजबूर किया जाता है, तो यह समाज का दोगलापन है ।

इस शोध में माध्यम से हमें यह मालूम चलता है कि उस समय जाति व्यवस्था के नीति के अनुसार सारे गाँव की सुरक्षा और सेवा करना माँग जाति का काम था । अर्थ को अर्जित करने के लिए और कोई व्यवसाय वे नहीं कर सकते थे । उस समय के साहूकारों, जमींदारों के खेतों पर उन्हें बेगारी ही करनी पड़ती, जिसके एवज में थोड़ा सा अनाज मिलता, जिससे वें अपना और परिवार का थोड़े दिन के लिए गुजारा कर पातें हैं । वर्ष के बाकी दिनों में फाँकें काटना ज़िंदगी का हिस्सा बन गया था । जब भूख ज़्यादा ही सताने लगती, बच्चों का बिलखना देखा नहीं जाता, तो घने अंधेरे में अपने तीक्ष्ण औज़ार निकाल कर चोरी, डकैती के लिए निकल पड़ते । यह भूख ही वह शक्ति है जिसके कारण इन निरही मनुष्यों को अपराध करने पर मजबूर कर देती है ।

फकिरा जो इस उपन्यास का नायक है अपने पिता के समान ही बहादुर और संघर्षशील जवान है । इस उपन्यास में फकिरा और उसके साथी जब चारों ओर से प्रतिक्रियावादी ताकतों से पीट जाते हैं

और उससे मुक्ति का कोई मार्ग उन्हें नहीं मिलता तो एक दिन रात में डकैती करने के लिए निकल पड़ते हैं। सरकारी ख़जाना लूटने के कारण वे अंग्रेज सरकार की आखों पर चढ़ जाते हैं। एक पूरा फौजी-दस्ता उनकी खोज में तैनात किया जाता है। फकिरा जब पकड़ा नहीं जाता तो उसके सभी परिवार और गाँव वालों को बंदी बनाकर उन पर अत्याचार किए जाते है। अंत में फकिरा को आत्म समर्पण करना पड़ता है। समाज के अत्यंत पिछड़े और अंतिम पायदान पर खड़े इस समुदाय के आर्थिक, सामाजिक परिस्थिति में सुधार करने का प्रयास ना तो गाँव के जमींदार करते हैं और न ही सत्ताधारी सरकार। ऐसा न करना उन्हें अपराधी बनाने में सहायक बनाते हैं।

इस उपन्यास में फकिरा और उसके साथियों का सामंतवाद और अंग्रेजी सत्ता से संघर्ष किसी विचारधारा के चेतना स्वरूप नहीं उभरा है। उस समय तक सामाजिक आंदोलन द्वारा समाज के निचले तबके में जागृति का कोई प्रयास नजर नहीं आता। हम देखते हैं कि फकिरा का विद्रोह जाति व्यवस्था के कारण उसमें पैदा हुए हीन भावना को नकारने का प्रयास तथा इसी व्यवस्था के चलते उसकी जाति के हिस्से में आई दारुण दरिद्रता के विरुद्ध है। सवर्ण समाज की उस क्रूरता के विरुद्ध है, जो इंसान को मानव के स्तर से गिरा कर हैवान बना देता है।

इस शोध प्रबंध में आज के परिवर्तनशील मानव जाति के व्यवहार को भी जोड़ कर देखा जा सकता है। इन दोनों उपन्यासों में पारिवारिक विघटन, यातना, विखराव तथा टूटन को भी यथावत प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। यह दोनों उपन्यास नटों और दलित मांग महार जाति के संघर्षपूर्ण इतिहास को जानने का एक सशक्त माध्यम है।

प्रस्तुत शोध विषय के विवेचन एवं विश्लेषण में वर्ग संघर्ष जैसी मान्यता की जो तर्क संगत एवं तथ्याक्षीत प्रस्तुती की है, वह वर्तमान साहित्य के मूल्यांकन की प्रधान कसौटी मानी जा सकती है इसे एक नई मान्यता के रूप में स्थापित नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत शोध की यह महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा सकती है।

Research Summary

In this Dissertation the research has been done on class struggle of “Kab Tak Pukaro” and “Fakira” the chapter have been divided into three chapter.

In the first chapter , the work done on the background of the class struggle and caste struggle of Indian society and show off the effect of social movements.

Second chapter based on Design of class and caste . this chapter describes about Design of class, types, struggle of class and description of the caste.

Third and last chapter depends on class struggle ‘Kab Tak Pukaru’ and “Fakira” In this chapter comparative studies have done on the both of Novel and Nato , Dalit , Mang- Mahar, In this chapter caste struggle shown.

“Kab Tak Pukaro” is very important novel of the hindi in which presentation shown on the “Nut’ Caste and its situation. Directly We did’nt found ay struggle of caste but get angry of Nats in Socialism.

This blow up shows through the sukhram who feel hurted to see the enlightment of its Caste. Sukhram got established in nomadic Caste but he didn’t accept afterwards of the lack of things but still thoughts about its past. So he thought about the old Castle. He hate them who have ruined his right, based on the classification.

At the point of wide spread got the authentication of the family situation of the Nuts and Pain. In Which feel only on based of the class.

Anna Bhau Sathe represents tragedy in the Novel of Fakhira at the time of research its believe that honest and brave Caste got exile by general Candidate.

This is the power of hungry for that they were helpless and did accused.

Fakira who is the leader of this Novel he is the young and brave boy as same as his father, In this novel describe one night they went for Dacoit , to looted the Government articles, British Army searching them to arrest them but he didn't caught by the brithisher in this situation . Britishers torture to their family and villagers at last fakira had to surrender.

To improve their economic growth and social situation does not try by the land lord nor politicians. This helps them to become accused.

In this Novel fakira and his friends did not reform against English politics. At the time of there is nothing to reform its thoughts. This is the cruelty of forward socialism which down the status of the human being. This caste is living only for their reputation they always work for their village safely..

Ranoji Mang, father of fakira of the vategarn has been Martyr for the reputation of his villages. Villagers feel proudness for the sacrifice

but at the time of his live life captured his rights and at the time of Martyr they give him honour.

This is the duality of Social.

Through this Dissertation, we know that according to caste system, mang Caste worked for the safety of villager and villages.

To get economical structure , they don't do any business that time they working in the field of land lord for that they get grains, this helps them to survive their family remain days they were unemployed, at the time of hungry and crying of their child, they used their arrow for Dacoit and steal.

In this dissertation, development of the human being and its behaviour , both of the Novel is powerful medium of Nat and Many Mahar Caste.

In the analysis of struggle of class which is logical in the form and factual presentation. Evolution of present literature is the good and can be establish by a new approval. Dissertation can be a important achievement.